# आधी आबादी

हर सन्डे वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 31 मार्च 2024, अंक – 47

# 'कोई तो सुने अंतहीन दर्द और घुटन से भरी हमारी ज़िंदगी की पुकार'

▪ हीरेंद्र झा

कानपुर में मेरे एक परिचित मित्र हैं - अनिल सैनी। अनिल लगभग 16 साल से बिस्तर पर ही पड़े हुए हैं। उनके कमर से नीचे का हिस्सा सुन्न पड़ गया है, बेजान पड़ गया है। मतलब ये कि उन्हें कमर के नीचे किसी भी तरह का एहसास नहीं होता। मल मूत्र त्याग का भी उन्हें कुछ पता नहीं चल पाता। बिस्तर पर पड़े-पड़े उनके शरीर में बेड शोर हो गया है। इस वजह से भी वो परेशान रहते हैं। भावुक होकर कहते हैं- भैया, ये ज़िंदगी भी कोई ज़िंदगी है। दरअसल आज से तकरीबन सोलह साल पहले एक हादसे में अनिल पर एक दीवार गिर पड़ा था और जिस कारण उनके कमर का निचला हिस्सा दब गया था। कुछ जानकारी का अभाव और कुछ लापरवाही ऐसी रही जिस कारण वो आज इस तरह से जीने के लिए विवश हैं। दरअसल रीढ़ की हड्डी में चोट लगने की वजह से स्पाइनल कॉर्ड इंजरी हो जाती है और लोग बरसों तक इसमें बिस्तर पर पड़े-पड़े ही अपनी पूरी ज़िंदगी काट देते हैं। इसमें एक मुख्य बेडसोर घाव बन जाता है जो कि आदमी को नासूर की तरह ज़िंदगी भर रहता है और इस कारण जीवन भर उन्हें दवा पट्टी करती रहनी होती है। जो लोग आर्थिक रूप से सक्षम नहीं हैं उनके लिए यह सब अत्यंत पीड़ादायक होती है। देश भर में स्त्री-पुरुष मिलाकर तकरीबन 5 लाख लोग स्पाइनल कॉर्ड इंजरी की वजह से बेहाल हैं। कोई भी इनकी सुध नहीं लेता। कोई मीडिया भी इन पर बात नहीं करती। इसलिए जब अनिल ने मुझसे अपनी आपबीती बताई तो मैंने उसी दिन तय कर लिया था कि आधी आबादी संडे में हम इस मुद्दे पर अवश्य बात करेंगे। अनिल बताते हैं कि- स्पाइनल कॉर्ड इंजरी का इलाज भारत में क्या दुनिया में नहीं है और यह बहुत ही पीड़ा दायक इंजरी है, लाखों लोग स्पाइनल कॉर्ड इंजरी से पीड़ित है और 25- 25, 45- 45 सालों तक बेड पर पड़े रहते हैं,जिसकी वजह से उनका शरीर के नीचे कहीं भी घाव यानी कि बेड सोर हो जाते हैं।

अनिल कहते हैं- यह एक बहुत ही पीड़ा दायक और कष्टप्रद बीमारी है। मोशन से लेकर पेशाब तक का पता नहीं चलता। स्पाइनल कॉर्ड इंजरी के पीड़ित व्यक्ति के दुख दर्द का कोई अंदाजा भी नहीं लगा सकता है, वह सालों तक बेड में पड़ा रहता हैं, कितनी दिक्कतों से रहता है और कोई ईलाज न होने की वजह से आखिर में वह मर जाता है।

अनिल ने अभी-अभी व्हाट्सएप पर लिख कर भेजा है कि ऐसी इंजरी ईश्वर दुश्मन को भी ना दे, अगर कोई इंजरी कोई बीमारी होती है तो उसका इलाज हो तो ठीक है, नहीं तो पीड़ित व्यक्ति को इच्छा मृत्यु दे देनी चाहिए। बहुत से लोग लेटे-लेटे भगवान से मौत की भीख मांगते हैं। जिन लोगों के पास पैसा है ,वह फिजियोथैरेपी कराकर थोड़ा बहुत रिकवर हो जाते हैं, लेकिन उनका कष्ट फिर भी कम नहीं होता और जो गरीब आदमी है वह लेते-लेते ही बेड पर मर जाता है।

अनिल की गुजारिश है कि हमारी केंद्र सरकार ही नहीं बल्कि दुनिया के सभी देशों की सरकारों को विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ मिलकर स्पाइनल कॉर्ड इंजरी (एससीआई) पेशेंट के ईलाज को लेकर, रिसर्च करानी चाहिए और इसके लिए संवेदनशीलता दिखाती चाहिए। आयुष्मान कार्ड वालों को 5 लाख तक का इलाज देने वाली सरकार भी जानती

है कि इसमें फिजियोथैरेपी के लिए कोई पैसा नहीं दी जाती है। आज स्पाइनल कॉर्ड इंजरी से अमीर गरीब महिला पुरुष सभी पीड़ित हैं। अनिल ऐसे लोगों के एक व्हाट्सएप्प ग्रुप में भी जुड़े हुए हैं जहाँ तमाम सदस्य अपने अपने दर्द के बारे में बताते हैं। कुछ हौसला भी देते हैं। लेकिन, यह सब लंबे समय से इसी उम्मीद में जी रहे हैं कि कोई तो सुने इनके इस अंतहीन दर्द और घुटन से भरी ज़िंदगी की पुकार!

## विशेष संपादकीय

### लोकसभा चुनाव 2024 में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

*– चारुल मल्लिक*

आगामी संसदीय चुनाव प्रचार अभियान में महिलाएं केंद्रीय भूमिकाओं में नजर आ रही हैं। हर राजनीतिक दल महिलाओं को लेकर चुनावी वादे कर रहा है जो देश के कुल 96.8 करोड़ मतदाताओं में करीब आधी हैं। सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस लगातार महिला मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए एक किस्म की होड़ में नजर आए हैं। भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने जहां महिलाओं पर केंद्रित व्यापक स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य कार्यक्रमों की शुरुआत की है, वहीं कांग्रेस ने नारी न्याय योजना की पेशकश की है जिसके तहत महिलाओं के बैंक खातों में एक लाख रुपये डाले जाएंगे और केंद्र सरकार की सभी नौकरियों में उन्हें 50 फीसदी आरक्षण दिया जाएगा। ऐसे बढ़ाचढ़ाकर किए गए वादे किस हद तक पूरे हो सकते हैं यह एक बड़ा सवाल है लेकिन यह देखना विचित्र है कि सभी दल राजनीतिक बयानबाजी में इतने आगे निकल चुके हैं। पिछले वर्ष संसद के विशेष सत्र में 106वां संशोधन अधिनियम पारित होने के बाद यह विषय खासतौर पर विवादास्पद हो गया है। इसे महिला आरक्षण विधेयक के नाम से जाना जाता है जिसके तहत 15 वर्षों तक महिलाओं को संसद में 33 फीसदी आरक्षण देने की बात कही गई है। चूंकि यह प्रावधान परिसीमन के बाद लागू होगा इसलिए सभी राजनीतिक दलों के पास पर्याप्त समय है कि वे इसके लिए अपनी चुनावी सूची तैयार कर सकें। इसके बावजूद राजनीतिक दल महिलाओं के मुद्दों पर दिखावा ही करते हैं और इसकी एक बानगी यह है कि किसी प्रमुख राजनीतिक दल ने अपनी पार्टी उम्मीदवारों की सूची में अब तक महिलाओं को समुचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया है। इस होड़ में भाजपा आगे है और 25 मार्च तक उसने जितने उम्मीदवार घोषित किए हैं उनमें 17 फीसदी महिलाएं हैं। अब तक 66 महिला उम्मीदवारों के साथ पार्टी ने लैंगिक आधार पर अपना प्रदर्शन सुधारा है। साल 2014 में उसके 428 उम्मीदवारों में से 38 महिलाएं थीं, 2019 में यह आंकड़ा सुधरकर 436 में से 55 हुआ। कांग्रेस उम्मीदवारों की सूची बताती है कि उसने अब तक 12 फीसदी महिलाओं को टिकट दिया है। सबसे अधिक चकित करने वाली सूची तृणमूल कांग्रेस की है। पार्टी ने पश्चिम बंगाल की 42 सीटों में से 12 पर महिलाओं को उम्मीदवार बनाया है। बहरहाल, कुल मिलाकर भले ही आंकड़े हतोत्साहित करने वाले हों लेकिन ये 2019 के आम चुनाव की तुलना में बेहतर रहने वाले हैं जब कुल प्रत्याशियों में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 9 फीसदी थी। पिछली लोक सभा में 78 महिलाएं चुन कर आई थीं जो कुल सदस्यों का 14.3 फीसदी था। इसके बावजूद यह देश के आम चुनावों के इतिहास में महिलाओं की सबसे बड़ी संख्या थी। चरणबद्ध तरीके से हो रहा स्थिर सुधार उत्साहित करने वाला है लेकिन ये आंकड़े बताते हैं कि महिला आरक्षण कानून लागू होने के बाद राजनीतिक दलों को तेजी से प्रयास करने होंगे। इंटर-पार्लियामेंटरी यूनियन (आईपीयू) के अनुसार फिलहाल भारत संसद में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के 26.9 फीसदी के वैश्विक औसत से काफी पीछे है। आईपीयू की संसद में महिलाओं की हिस्सेदारी की ताजा मासिक वैश्विक रैंकिंग में भारत 184 देशों में से 144वें स्थान पर है। कॉर्पोरेट बोर्ड में महिलाओं का प्रतिनिधित्व हालांकि कम है लेकिन इसमें सुधार हुआ है। 2019 के 15 फीसदी के बजाय अब 20 फीसदी महिलाएं कंपनियों के बोर्ड में हैं। परंतु संसद तथा राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों की विधानसभाओं में महिलाओं की भागीदारी दोगुनी करने के लिए सभी दलों को महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर खास ध्यान देना होगा। संसद ने कानून पारित कर दिया है और यह समय आने पर प्रभावी हो जाएगा लेकिन 2024 के लोक सभा चुनाव में इसे लेकर प्रतिबद्धता दर्शाई जा सकती थी।

## इंटरव्यू

### महिलाओं के बगैर यह दुनिया नहीं चल सकती - फराह ख़ान

"आधी आबादी संडे के इस इंटरव्यू में फराह ख़ान ने इंडस्ट्री में कदम रखने से लेकर डायरेक्शन, कोरियोग्राफी और एक्टर्स के नखरे तक पर दिल खोलकर बातें की हैं।"

**सवाल:** महिला पुरुष समानता को लेकर आपकी सोच क्या है?

**फराह:** अभी ही हमने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस सेलिब्रेट किया। मैं समझती हूँ एक खास दिन बस महिलाओं के सेलिब्रेशन के लिए क्यों होता है? मुझे इससे नफरत है। देखें तो हर दिन महिलाएं घर, ऑफिस और बच्चों को संभालती हैं। ऐसे में उनका तो हर दिन होना चाहिए। उनके बगैर कुछ हो ही नहीं सकता है। विमिन डे की जगह 'वन डे विदआउट विमिन' हो जाए तो सारे पुरुष एक ही दिन में अस्पतालों में भर्ती हो जाएंगे इसलिए इसे हर दिन सेलिब्रेट करना चाहिए क्योंकि महिलाओं के बगैर यह दुनिया चलने से रही।

**सवाल:** आज इंडस्ट्री में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है?

**फराह:** पहले इंडस्ट्री में महिलाओं को कम स्पेस मिलता था। पर्दे पर वो बस एक सपोर्टिंग रोल में नजर आती थीं। पहले महिलाओं को बस बैकस्टेज काम मिलता था, वो भी बहुत नॉर्मल सा, लेकिन अब वक्त बदल रहा है। मेरी फिल्म हैपी न्यू इयर में पचास प्रतिशत स्टाफ महिलाओं का था। इसमें असिस्टेंट डायरेक्टर से लेकर शो रन करने तक में महिलाएं ही थीं। फिल्मों की बात करें तो आज बहुत सारी महिला प्रधान मूवीज बन रही हैं। रवीना टंडन, सुष्मिता सेन, तब्बू जैसी कलाकार को देख लीजिए, आज भी काम कर रही और बेहतरीन काम कर रही हैं।

**सवाल:** बॉडी शेमिंग का चलन भी बढ़ा है वैसे?

**फराह:** अक्सर बॉडी शेमिंग को लेकर लोग ट्रोल करते हैं लेकिन मैं इसको गलत मानती हूं। जो जैसा है, ठीक है। बस उसका काम बढ़िया हो। लेकिन इन सबके बावजूद हम कलाकारों को फिट रहना पड़ता है। मैं अपनी बात बताऊं तो मैं काफी लेट मां बनी। दो साल पहले तक मैं खुद को फिट रखने की कोशिश में थी। अपने वजन को कम करना था इसलिए नहीं कि मुझे लोगों से फर्क पड़ रहा था बल्कि इसलिए ताकि मैं फिट रहूं, अपने बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय तक जिंदगी खुशहाली से जी सकूं। क्योंकि हम अगर खुद को फिट नहीं रखेंगे तो जीवन में खुशहाल कैसे रह सकेंगे। अपने परिवार के साथ ज्यादा खुशहाल समय बिताने के लिए फिट रहना जरूरी है।

**सवाल:** उम्र बढ़ने के साथ भी महिलाओं को कम मौके मिलते हैं वैसे?

**फराह:** मैं उम्र को बस एक नंबर मानती हूं। आपका दिल हमेशा जवान रहना चाहिए। कई बार मैं इतनी मस्ती करती हूं कि बच्चे कहने लगते हैं कि मम्मा बस करिए आपकी वजह से हमें शर्मिंदगी महसूस हो रही है।

**सवाल:** आप टीवी भी बहुत करती हैं? अब नया क्या कर रही हैं?

**फराह:** मुझे टीवी पसंद है क्योंकि इसकी पहुंच घर के हरेक सदस्य तक होती है। इसके मुकाबले फिल्में अभी पीछे हैं और जहाँ तक नये की बात है तो बहुत जल्द आप हमारा धमाल देखने वाले हैं।

## हलचल

### AAP का 'केजरीवाल को आशीर्वाद' अभियान शुरू, पत्नी सुनीता ने जारी किया व्हाट्सएप नंबर

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल एक बार फिर मीडिया के मुखातिब हुईं। केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ अभियान शुरू किया गया है। पीसी के दौरान सुनीता केजरीवाल ने एक व्हाइ्सएप नंबर जारी किया है। उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल केजरीवाल को आशीर्वाद देने के लिए आप इस नंबर पर व्हाइ्सएप करें। सुनीता केजरीवाल ने लोगों से अपील की है कि अपने संदेश इस पर भेजिए। आप किसी भी पार्टी से हों। सुनीता केजरीवाल ने कहा कि- 'मुझे कई लोगों के फोन भी आए कि उन्होंने अरविंद के लिए व्रत भी रखा है, कितना प्यार करते हैं अरविंद जी से लोग। वो सब लिखकर भेजिए। कुछ और भी अगर कहना है या कुछ भी मन में आए तो इस नंबर पर भेज दीजिए। हर परिवार का हर सदस्य लिखकर भेजे, आपका मैसेज पढ़कर उनको बहुत अच्छा लगेगा। आपका एक-एक मैसेज उन तक पहुंचेगा।' उन्होंने आगे कहा कि मैं आप सबके मैसेज उनको जेल में देकर आऊंगी और उन्हें मैसेज देने के लिए आपको आम आदमी पार्टी का होने के जरूरत नहीं है। आप किसी भी पार्टी से हों या कोई भी हों अरविंद जी को मैसेज जरूर भेजें। सभी युवा महिलाएं, बच्चे, बूढ़े, अमीर, गरीब सब लोग अपने भाई अपने बेटे अरविंद जी को कुछ न कुछ जरूर लिखें।

### केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण क्यों नहीं लड़ेंगी चुनाव?

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि उन्होंने लोकसभा चुनाव नहीं लड़ने का फ़ैसला किया है। निर्मला सीतारमण ने कहा कि चुनाव लड़ने के लिए उनके पास पैसों की कमी है और आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु जैसे दक्षिण के राज्यों में जीत के लिए जो मानदंड होते हैं, उन पर वह खरी नहीं उतरती हैं। ऐसी अटकलें थीं कि निर्मला सीतारमण आंध्र प्रदेश या तमिलनाडु से चुनाव लड़ सकती हैं। अभी वह राज्यसभा सांसद हैं। निर्मला सीतारमण नरेंद्र मोदी के दोनों कार्यकाल में मंत्री रही हैं और दोनों बार राज्यसभा के ज़रिए ही संसद में पहुँचीं। बीजेपी इस बार राज्यसभा के ज़रिए संसद पहुँचे अपने मंत्रियों को लोकसभा चुनाव लड़ा रही है। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के अलावा पर्यावरण और श्रम मंत्री भूपेंद्र यादव लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। अभी दोनों राज्यसभा सांसद हैं। लोकसभा चुनाव 19 अप्रैल से शुरू हो रहा है। निर्मला सीतारमण के मुताबिक पार्टी अध्यक्ष ने मुझसे कहा था कि क्या मैं दक्षिण के राज्य तमिलनाडु या आंध्र प्रदेश से चुनाव लड़ना पसंद करूंगी? मैंने उनसे यही कहा कि  चुनाव लड़ने लायक मेरे पास पैसे नहीं हैं। मेरे साथ एक और समस्या है। आंध्र प्रदेश या तमिलनाडु में चुनाव जीतने के मानदंडों पर मैं खरी नहीं उतरती हूँ। किसी ख़ास समुदाय, किसी ख़ास धर्म का समीकरण भी होता है। ऐसे में मैंने ना कहा क्योंकि मैं इन मानदंडो पर फिट नहीं बैठती हूँ। मैं एहसानमंद हूं कि पार्टी ने मेरी दलील को मान लिया। पार्टी अध्यक्ष ने कहा कि चलो, आपका मन नहीं है, कोई बात नहीं।

### बांग्लादेश में 'बायकॉट इंडिया' अभियान, प्रधानमंत्री शेख हसीना भारत के साथ!

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख़ हसीना ने देश में उनके विरोधियों की ओर से चलाए जा रहे भारतीय उत्पादों के बहिष्कार के अभियान के जवाब में 'साड़ी' का मुद्दा छेड़ा है। शेख़ हसीना ने कहा है कि जब विपक्षी नेता अपने पार्टी कार्यालयों के बाहर अपनी पत्नियों के पास मौजूद भारतीय साड़ियों को जलाएंगे, तब ही ये साबित होगा कि विपक्ष वाक़ई भारतीय उत्पादों के बहिष्कार के लिए प्रतिबद्ध है। अंग्रेज़ी अख़बार द टेलीग्राफ़ ने बांग्लादेश में आम चुनाव के बाद से जारी भारतीय उत्पादों के बहिष्कार के इस मुद्दे को प्रमुखता से छापा है। शेख हसीना ने 1991-1996 और 2001-2006 के बीच विपक्ष में रहने वाले अपने दिनों को याद करते हुए कहा, "जब बीएनपी सत्ता में थी, तब मंत्रियों की पत्नियां भारत जाया करती थीं, वे वहाँ साड़ियाँ ख़रीदती थीं और इधर-उधर घूमा करती थीं...वो एक सूटकेस के साथ जाती थीं और छह-सात बक्सों के साथ लौटती थीं।" बीते सप्ताह बांग्लादेश के मुख्य विपक्षी पार्टी बीएनपी के संयुक्त सचिव रुहुल कबीर रिज़वी ने अपनी कश्मीरी शॉल फेंक दी थी। माना जा रहा है कि इसी के जवाब में शेख़ हसीना ने विपक्षी पार्टी के नेताओं को अपनी पत्नियों की साड़ियां जलाने जैसी चुनौती दी है। बीएनपी के वरिष्ठ नेता रिज़वी ने मीडिया से कहा, "सोशल मीडिया 'बायकॉट इंडिया' अभियान से जुड़ी पोस्ट से भरा पड़ा है। लोगों के मन में भारतीय उत्पादों के आयात को लेकर असहमति है। भारतीय सामान के बहिष्कार की लहर दिख रही है।"

### 30 अरब डॉलर की मालकिन, भारत की सबसे अमीर महिला ने छोड़ा कांग्रेस का 'हाथ'

लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस को हर रोज एक के बाद एक झटके लग रहे हैं। अब भारत की सबसे अमीर महिला और देश के टॉप अमीरों की लिस्ट में शुमार सावित्री जिंदल ने कांग्रेस छोड़ने का ऐलान किया है। उनका इस्तीफा ऐसे समय पर सामने आया है, जब उनके बेटे नवीन जिंदल हाल ही में कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल हुए हैं। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि सावित्री जिंदल भी बीजेपी का दामन थाम सकती हैं। हालांकि, अभी तक इस पर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। सावित्री जिंदल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपने इस्तीफे की जानकारी दी। उन्होंने लिखा, "मैंने विधायक के रूप में 10 साल हिसार की जनता का प्रतिनिधित्व किया और मंत्री के रूप में हरियाणा प्रदेश की निस्वार्थ सेवा की है। हिसार की जनता ही मेरा परिवार है और मैं अपने परिवार की सलाह पर आज कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे रही हूं। कांग्रेस नेतृत्व के समर्थन के लिए व सभी साथियों का, जिन्होंने हमेशा मुझे अपना सहयोग और मान-सम्मान दिया, उनकी सदैव आभारी रहूंगी।" ब्लूमबर्ग बिलनेयर्स इंडेक्स के मुताबिक, सावित्री जिंदल देश की सबसे अमीर महिला हैं। वह मुकेश अंबानी और गौतम अडानी जैसे अमीरों के साथ देश के टॉप 5 सबसे अमीर लोगों में भी शुमार हैं।  अगर दुनिया के अमीरों के बीच उनकी रैंकिंग की बात करें तो वह 56वें नंबर पर हैं। उनकी कुल संपत्ति 30 अरब डॉलर यानी लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपये है। इसके साथ ही वह दुनिया की सातवीं सबसे अमीर मां भी हैं। सावित्री जिंदल ओपी जिंदल ग्रुप की चेयरमैन हैं।

### आधी आबादी पर भाजपा का खास फोकस, इस बार दिया सबसे अधिक टिकट

वर्तमान सरकार ने संसद की नई इमारत में जो सबसे पहला और ऐतिहासिक विधेयक पास कराया, वह लोकसभा और राज्य विधानसभा में महिलाओं को 33 फीसद आरक्षण देने वाला था। लोकसभा चुनाव प्रचार में भाजपा इस विधेयक की जोर-शोर से बात तो कर रही है लेकिन टिकट देने के मामले में अब तक पार्टी इस आंकड़े के पास तक नहीं पहुंची है। हालांकि बीजेपी ने पिछले तीन लोकसभा चुनाव के मुकाबले इस बार सबसे अधिक महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया है। सातवीं सूची तक पार्टी की ओर से 409 उम्मीदवारों के नाम घोषित किए हैं जिनमें से 68 महिला उम्मीदवार हैं यानी करीब 17 प्रतिशत। इनमें से एक वडोदरा की उम्मीदवार रंजनबेन भट्ट ने चुनाव नहीं लड़ने की घोषणा की है। पार्टी ने 2009 के लोकसभा चुनाव में 433 उम्मीदवार मैदान में उतारे थे जिनमें 45 महिला उम्मीदवार थीं। इसी तरह 2014 में कुल 428 उम्मीदवारों में से 38 और 2019 में कुल 436 प्रत्याशियों में से 55 महिला उम्मीदवार थीं। इस लिहाज से देखें तो पिछले तीन लोकसभा चुनाव के मुकाबले इस बार भाजपा ने सबसे अधिक महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया है। लिस्ट में स्मृति ईरानी से लेकर कंगना रनौत तक का नाम भाजपा ने पहली सूची में 28 महिलाओं को टिकट मिला था। दूसरी सूची में 15 महिला उम्मीदवारों को चुनावी मैदान में उतारा गया। तीसरी सूची में एक और चौथी सूची दो महिला उम्मीदवारों के नाम की घोषणा हुई। पांचवीं सूची में 20 महिला उम्मीदवारों के नाम की घोषणा की गई। छठी और सातवीं सूची में एक- एक महिला उम्मीदवार को टिकट दिया गया।

# मंडी में बीजेपी प्रत्याशी कंगना रनौत का पहला रोड शो, उमड़ा हूजूम, जय श्री राम के गूंजे नारे

▪ आधी आबादी डेस्क

बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत को सुर्खियों में रहना बेहद पसंद है। फिल्मों के अलावा अपने बयानों से भी कंगना पूरी धमक के साथ आकर्षण का केंद्र बनी रहती हैं। इन दिनों वो एक नेत्री के रूप में सुर्खियां बटोर रही हैं। गौरतलब है कि वो इस बार भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर अपने गृह नगर मंडी से लोक सभा का चुनाव लड़ रही हैं। दिल्ली में बड़े नेताओं से मिलने के बाद कंगना पूरी तैयारी से मंडी पहुँच गई हैं। मंडी आते ही कंगना ने अपना पहला रोड शो भी पूरा कर लिया है। स्थानीय विधायक दिलीप ठाकुर ने अपनी पूरी ताकत लगा कर कंगना के रोड को सुपर हिट बनाने का काम किया और जिसकी वजह से कंगना के रोड शो में हजारों लोग जुड़ते नजर आए। कंगना भी इस दौरान पूरे रंग में दिखीं। वो लोगों से बड़े ही गर्मजोशी से मिल रही थीं। उनसे बात कर रही थीं। सेल्फ़ी खींचा रही थीं। कुल मिलाकर कंगना ने अपने पहले रोड शो में ही यह संदेश दे दिया है कि वो चुनाव के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। जनता का धन्यवाद करते हुए कंगना ने कहा कि मंडी की जनता ने मुझे बहुत प्यार दिया है। यहां आते ही मेरा शानदार स्वागत किया गया। उन्होंने कहा कि आप लोगों के लिए मैं कोई अभिनेत्री नहीं हूं, बल्कि आप सबकी बेटी और बहन हूं। कंगना ने अपने दादाजी को याद करते हुए कहा कि मेरे दादाजी यहां विधायक थे और उन्होंने अपना जीवन यहां के लोगों की सेवा में लगा दिया। मैं जीतकर आई तो आपकी सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ूंगी। कंगना ने जनता को संबोधित करते हुए जय श्री राम के नारे भी लगाए। साथ ही जनता से नरेंद्र मोदी जिंदाबाद नारे लगाने की अपील की। कंगना ने यहां महिलाओं की उपलब्धियां गिनवाकर नारी शक्तिकरण पर भी बात की। कंगना ने पीएम नरेंद्र मोदी को बेस्ट लीडर बताया। उन्होंने कहा कि उनकी लीडरशिप में हम सभी अच्छा काम करेंगे। कंगना ने कांग्रेस को भी आड़े हाथों लिया। उन्होंने राहुल गांधी पर हमला बोलते हुए कहा कि वे कहते हैं कि हमने हिंदुओं की शक्ति को समाप्त करना है। क्या वे हमारी मातृ शक्ति को खत्म करना चाहते हैं। तुसां ऐड़ा नी सोचणा कि कंगना हीरोइन व स्टार है तुसां ऐड़ा सोचणा मैं तुसां दी बैहण व बेटी हां। तुसां सीधे मेरे कन्ने मिलणा अपनी गल दसणी। दिल्ली से लौटने के बाद कंगना पूरी तरह स्थानीय रंग में रंगी दिखी। भांबला में लोगों को संबोधित करते हुए कंगना ने कहा कि मैं मंडी की बेटी हूं और ऐसा कोई नहीं है जो उसे नहीं जानता। कंगना ने कहा कि भाजपा ने मुझे टिकट दी तो कांग्रेस नेताओं ने कूटनीति शुरू कर दी और मैं बाहर की लगने लगी। यह भी कहा कि कंगना जीतने के बाद नहीं मिलेगी, मैं मंडी की बेटी हूं और आप मुझे कभी भी फोन कर सकते हैं। आप सब मेरा परिवार हैं। मैं चाहती तो किसी बड़े शहर में घर बना सकती थी लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। कांग्रेस केवल गुमराह कर रही है। महिलाओं को 1500-1500 रुपये का लालच देकर उनकी कीमत लगाई जा रही है, जो लोग बेटियों के भाव की बात करते हैं और जो प्रभु श्रीराम के नहीं हो सके वे आपके कैसे हो सकते हैं। भाजपा नेता ने जब उनसे बात की कि सरकाघाट आपका घर है तो वहां से कितनी लीड होगी तो मैंने उत्तर दिया कि सरकाघाट की जनता अपनी बेटी को इतनी लीड दिलाएगी जो आगे के लिए उदाहरण बनेगी। सरकाघाट के प्रति मेरी क्या भावनाएं हैं, सबको पता है। आप लोग ही मेरा मार्गदर्शन करेंगे, कैसे क्या करना है यह भी बताएंगे। मुझसे कोई गलती हो तो माफ भी करें। 12 मिनट के संबोधन में उन्होंने हर पहलू पर चर्चा की।

### सर्राफा बाज़ार

| 22 कैरेट सोना | चांदी |
| --- | --- |
| ₹62,580 | ₹80,800 |
| प्रति 10 ग्राम | प्रति किलो |

# पश्चिम बंगाल : संदेशखाली से चर्चा में आईं रेखा पात्रा को बीजेपी ने क्यों बनाया उम्मीदवार?

▪ प्रभाकर मणि तिवारी

वो आंचल से चेहरा छुपाने के बावजूद पश्चिम बंगाल के उत्तर 24-परगना जिले में बांग्लादेश के सीमावर्ती इलाके में स्थित संदेशखाली में कथित रूप से तृणमूल कांग्रेस नेताओं के यौन उत्पीड़न की शिकार महिलाओं का चेहरा बन गई थीं। अब चेहरे से आंचल हटा कर वह संसद में संदेशखाली ही नहीं बल्कि पूरे बंगाल की पीड़िताओं का चेहरा बनना चाहती हैं। यहां संदेशखाली की बहू रेखा पात्रा की बात हो रही है। भाजपा ने उन्हें बशीरहाट संसदीय सीट से अपना उम्मीदवार बनाया है। संदेशखाली विधानसभा सीट इसी के तहत है। संदेशखाली की घटना में यौन उत्पीड़न की जिस शिकायत के आधार पर तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता और इस मामले के मुख्य अभियुक्त शाहजहां शेख का दाहिना हाथ रहे शिव प्रसाद ऊर्फ शिबू हाजरा को गिरफ्तार किया गया था। ये शिकायत रेखा पात्रा ने ही दर्ज कराई थी। आंदोलन के दौरान चेहरे पर आंचल रखकर पत्रकारों से बातचीत के दौरान रेखा ने दावा किया था कि वह भी तृणमूल कांग्रेस नेताओं के यौन उत्पीड़न का शिकार हो चुकी हैं।

बीते महीने संदेशखाली की महिलाएं जब तृणमूल कांग्रेस नेताओं के कथित अत्याचारों और यौन उत्पीड़न के खिलाफ सड़कों पर उतरी थीं, तब रेखा उस भीड़ में पहली कतार में खड़ी थीं। वह जल्दी ही इस आंदोलन का चेहरा बन गई थीं। प्रधानमंत्री मोदी ने बशीरहाट सीट से भाजपा उम्मीदवार और संदेशखाली की महिला रेखा पात्रा से फोन पर बात की, उनसे चुनावी तैयारियों के बारे में पूछा और शक्तिस्वरूपा कह कर संबोधित किया। इतना ही नहीं संदेशखाली की घटना के बारे में भी जानकारी ली। प्रधानमंत्री का ये फ़ोन रेखा पात्रा की उम्मीदवारी के एलान के 48 घंटे के भीतर ही आया। दरअसल, भाजपा संदेशखाली के मुद्दे को जोर-शोर से उठा रही थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अपनी चार-चार रैलियों में यह मुद्दा उठा चुके थे। लेकिन वहीं की किसी महिला को बशीरहाट टिकट से टिकट मिलेगा, इसकी भनक पार्टी के ज्यादातर नेताओं को भी नहीं थी।

### रेखा पात्रा का नाम उम्मीदवारी की दौड़ में कैसे शामिल हुआ?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संदेशखाली से करीब 80 किमी दूर उत्तर 24-परगना जिले के ही बारासात में बीते छह मार्च को अपनी रैली में संदेशखाली की कुछ पीड़िताओं से मुलाकात की थी। हालांकि देर से मौके पर पहुंचने के कारण रेखा की प्रधानमंत्री से मुलाकात नहीं हो सकी थी। पार्टी के सूत्रों का कहना है कि आंदोलन में रेखा की भूमिका के बारे में सुनकर प्रधानमंत्री ने उसी दिन उनको उम्मीदवार बनाने का फैसला कर लिया था।

### रेखा के नाम का हो रहा विरोध

हालांकि रेखा के नाम का एलान होते ही संदेशखाली के कई इलाको में उनके ख़िलाफ़ रातोंरात पोस्टर लग गए हैं। इन पोस्टरों में लिखा है, "हम भाजपा उम्मीदवार के तौर पर रेखा को नहीं चाहते।" एक अन्य पोस्टर में लिखा है कि संदेशखाली के आंदोलनकारी लोग रेखा पात्रा को नहीं चाहते। भाजपा इसके लिए तृणमूल कांग्रेस को ज़िम्मेदार ठहरा रही है। पार्टी की बशीरहाट ज़िला समिति के अध्यक्ष तापस घोष कहते हैं, "रेखा के नाम पर कहीं कोई असंतोष नहीं है। तृणमूल कांग्रेस ओछी राजनीति के तहत यह सब करा रही है।'' लेकिन संदेशखाली के तृणमूल कांग्रेस विधायक सुकुमार महतो कहते हैं, "संदेशखाली में सड़कों पर उतरने वाली रेखा को टिकट मिलने की वजह से पार्टी के पुराने कार्यकर्ता नाराज हैं और रेखा के ख़िलाफ़ पोस्टर लगा रहे हैं।" हालांकि गांव की कुछ महिलाएं रेखा को टिकट मिलने से खुश हैं। एक महिला कहती है, "गांव की कोई महिला अब तक संसद तक नहीं पहुंची है। रेखा की उम्मीदवारी से महिलाएं खुश हैं। उनका कहना है कि कम से कम हमारी आवाज़ तो दिल्ली तक पहुंचेगी।"

(साभार: बीबीसी हिन्दी)

# उड़ान भरने के बाद क्रैश हो जाती है

## करीना कपूर खान, तब्बू और कृति सैनन की 'क्रू'

▪ स्मिता श्रीवास्तव

कभी सबसे चर्चित एयरलाइंस में एक रही किंगफिशर के दीवालिया होने के बाद इसका मालिक विजय माल्या लेनदारों से बचने के लिए विदेश भाग गया। कंपनी के इस स्थिति में पहुंचने तक कर्मचारियों की तनख्वाह में कटौती या वेतन न मिलने की खबरें आ रही थीं। इसी थीम पर निधि मेहरा और मेहुल सूरी ने 'क्रू' की कहानी, स्क्रीनप्ले और संवाद लिखे हैं। फिल्म में कोहिनूर एयरलाइंस के मालिक का नाम विजय माल्या की जगह विजय वालिया रखा गया है, जो बार-बार माल्या की याद दिलाता है। दिलचस्प बात यह है कि भारत सरकार भले ही विजय माल्या का अभी तक प्रत्यर्पण नहीं करा पाई, लेकिन निर्माता एकता कपूर की तीन एयर होस्टेस वालिया को वापस लाने में कामयाब रहती हैं। उसके साथ हजारों करोड़ों का सोना भी लाती हैं।

### क्या है क्रू की कहानी?

कोहिनूर एयरलाइंस में कार्यरत गीता सेठी (तब्बू), जैस्मिन (करीना कपूर) और हरियाणा की दिव्या राणा (कृति सैनन) के साथ पूछताछ के साथ कहानी आरंभ होती है। उन पर सोने की तस्करी का संदेह है। छह महीने से उन्हें तनख्वाह नहीं मिली है। गीता कंपनी द्वारा पीएफ मिलने के बाद अपना रेस्त्रां खोलने के इंतजार में हैं। अपने नाना के साथ रह रही जैस्मिन आर्थिक तंगी से परेशान है। दिव्या एयर होस्टेज है, लेकिन घर में बता रखा है कि पायलट है। इन विमान परिचायिकाओं के हाथ जैकपाट लगता है। विमान में सीनियर अधिकारी राजवंशी (रमाकांत दयामा) को हार्ट अटैक आता है। उसके शरीर पर सोना बंधा मिलता है। गीता उसकी सूचना देती है, लेकिन बाद में वे तस्करी करने वाले को खोजती हैं और खुद ही चॉकलेट के आकार में सोने की तस्करी करने लगती हैं। इस बीच कंपनी दीवालिया होती है। उन्हें चेयरमैन विजय वालिया (शाश्वत चटर्जी) की असलियत पता चलती है कि वही सोने की तस्करी के पीछे है। बस फिर तीनों भगोड़े वालिया को पकड़ने और सोना वापस लाने विदेश चल देती हैं।

### कैसा है स्क्रीनप्ले और संवाद?

निर्देशक राजेश ए कृष्णन इससे पहले लूटकेस का निर्देशन कर चुके हैं। यहां पर क्रू के साथ उनकी उड़ान डगमगा गई है। कई दृश्य बचकाने हो गए हैं। कंपनी के ऑफिस में ताला पड़ने के बावजूद तीनों वहीं बैठकर योजना बनाती हैं। तीनों की ड्यूटी हमेशा साथ लगती है। तीनों आसानी से हर काम को अंजाम दे लती हैं। कस्टम अधिकारी जयवीर सिंह (दिलजीत दोसांझ) संवादों में ईमानदार और साहसी दिखाया है, लेकिन फिल्म में गलती से नजर नहीं आता। एचआर हेड मनोज मित्तल (राजेश शर्मा) अकेले ही वालिया के सोने को अल बुर्ज भेज रहा है, यह भी हजम नहीं होता। विदेश में वालिया का पीछा करने से लेकर उसके प्लेन को हाइजैक करते हुए तीनों को देखकर लगता है, इन पर हिंदी फिल्मों का बहुत प्रभाव है। आईडी से फोटो बदलना, होटल में हाउस किपिंग की नौकरी करना, सफाई कर्मचारी की मदद लेना, फोन पर सेक्स चैट जैसे घिसे-पिटे फार्मूले हैं, जो कई हिंदी फिल्मों का हिस्सा रहे हैं। वर्तमान में एयरपोर्ट पर इतनी सुरक्षा है, जहां से कैंची भी नहीं ले जा सकते। वहां से यह एयर होस्टेस 12 किलो सोने की तस्करी करने में आसानी से कामयाब हो जाती हैं। लेखक ने एक दृश्य में दीवालिया हुई एयरलाइंस के कर्मचारियों के दर्द को फिल्म का हिस्सा बनाकर सहानुभूति बटोरने की कोशिश की है। यह जेट एयरवेज के कर्मचारियों की यादों को ताजा करती है, जब नरेश गोयल दीवालिया घोषित हुए थे। इसी तरह कभी प्लेन ना उड़ाने वाली दिव्या राणा (कृति सैनन) हरियाणा के ऊबड़-खाबड़ रनवे पर किताब पढ़कर विमान उतारती है। यह स्थितियां हास्य पैदा नहीं करती।

### कहां डगमगाई फिल्म?

कहानी की शुरुआत रोमांचक तरीके से होती है, जैसे विमान का टेकऑफ होता है, लेकिन जैसे ही उड़ान भरने की बारी आती है, यह क्रैश हो जाती है। फिल्म में चोली के पीछे गाने का रीमेक है। यह थिरकाता है, लेकिन फिल्म की थीम के अनुरूप नहीं लगता है। फिल्म में द्विअर्थी संवाद कॉमेडी के लिए इस्तेमाल किए गए हैं। यह बीच-बीच में गुदगुदाने का काम करते हैं।

तब्बू, करीना और कृति की तिकड़ी को पर्दे पर एक साथ देखना अच्छा लगता है। तीनों काफी स्टाइलिश लगी हैं। विजय वालिया के किरदार में शाश्वत चटर्जी की प्रतिभा का भरपूर इस्तेमाल करने में निर्देशक चूक गये। कपिल शर्मा तब्बू के पति की मेहमान भूमिका में हैं, मगर कॉमिक दृश्यों में कुछ जोड़ नहीं पाये। इसमें दो राय नहीं कि यह कॉसेप्ट अच्छा है, लेकिन कॉमेडी के साथ यह घिसे-पिटे फार्मूले में ही बंधकर रह गई। अगर स्क्रीनप्ले दमदार होता, तो निसंदेह यह अच्छी फिल्म होती।

मूवी नाम: क्रू (Crew)
रेटिंग: ***/2 ढाई स्टार
कलाकार: तब्बू, करीना कपूर खान, कृति सैनन, राजेश शर्मा, शाश्वत चटर्जी, दिलजीत दोसांझ
निर्देशक: राजेश ए कृष्णन
निर्माता: एकता कपूर
लेखक: निधि मेहरा, मेहुल सूरी

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ✿ संपादक: हीरेन्द्र झा ✿ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ✿ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353